मोबाईल इस ज़माने का सब से बडा फितना

हज़रत मुफ्ती अहमद खानपुरी दब.

महमुदुल मवाइज़ उर्दु से रिवायत का खुलासा लिप्यान्तर किया गया है.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

आज कल सब से बडा फितना मोबाईल और इन्टरनेट है उसको लोग मस्जीद मे भी लाते है चाहिये तो ये था के उसको मस्जीद मे लेकर ही न आते घर छोड कर आते लेकिन लोग मस्जीद मे भी मोबाईल लाना नही छोडते जहा अल्लाह का जिकर हो कुरान की तिलावत हो वहा पर भी शैतान को लेकर आते है ये बहुत ही खतरनाक फित्ना है कयू के जब आदमी मोबाईल लेकर मस्जीद मे आता है तो नमाजो के दरमीयान जो आवाज़े उसके अन्दर से निकलती है जिसे हम रिंगटोन केहते है.

अल्लाह के बन्दे इसे रखते है आज कल तो अच्छे अच्छे दीनदार लोग ऍहले इल्म हज़रात अच्छे नेक सालेह उनका रिंगटोन बिल्कुल हराम होती है यानी म्यूज़िक की आवाज़

को रखते है उसको रसूलुल्लाहﷺ ने लानाती आवाज़ करार दिया है हजरत आयशा (रदी) की रिवायत है के रसूलुल्लाहﷺ ने इरशाद फरमाया के दो आवाज़े अल्लाह के यहा लानत वाली आवाज़े है एक तो ये गाने बजाने की जो खूशी के मोके पर होता है और दूसरी वो आवाज़ जो गमी के मोके पर किसी की मौत पर मख्सूस अंदाज़ मे मख्सूस आवाज़ निकाल कर रोते थे जिसको नौहा केहते है उन दोनो आवाज़ो को रसूलुल्लाहﷺ ने लानाती आवाज़ करार दिया है.

मोबाईल की रिंगटोन के बारे मे ऍहतियात: ये रिंगटोन की आवाज़ तो म्यूज़िक की आवाज़ है उस म्यूज़िक की आवाज़ के बारे मे तो हजरत अली (रदी) की रिवायत है हुजूर ने फरमाया के अल्लाह ने मुजे गाने बजाने के साधन को मिटाने के लिये भेजा है तो अल्लाह करे रसूल जिस चीझ को मिटाने के लिये आये थे उसके बारे मे आज ये हो रहा है के अच्छे खासे दीनदार किसम के लोग भी ऐसे है के उनको ये सुने बगैर चैन पडता नही है.

अब रिंगटोन भी जो है वो मुस्तकिल इन कंपनीयो का एक कारोबार बन गया उनके फोन आते रेहते है फलाने गाने के तरज़ पर ये रिंगटोन है ये फलाने गाने की है और लोग पैसे दे दे कर उस रिंगटोन को अपने मोबाईल मे दाखिल कर रहे है ये कितनी खतरनाक बात है.

मोबाईल भी जब इस्तेमाल करना है तो इस्तेमाल करने वाले के लिये ज़रूरी था के मोबाईल के मुताल्लीक सारी तफसीलात उल्मा से मालूम करे और पूछे के मे किन शरतो के साथ मोबाईल का इस्तेमाल कर सकता हु और जो शरतें बताई गई उन शरतों का लिहाज़ करके उसका इस्तेमाल करना चाहिये आज जो भी चीझ मार्केट मे आयी खरीदी और इस्तेमाल करना शुरू कर दिया उसकी कोई परवाह ही नही के अल्लाह के रसूलﷺ की इस सिलसिले मे किया हिदायते है.

शरीयत उस चीझ के इस्तेमाल की हमे इजाज़त देती भी है या नही? और अगर देती है तो किन शरतों के साथ किन

कायदे के साथ? उन बातो का हम ने ऍहतेमाम नही किया तो उसका नतीजा हमारे सामने है के मस्जीदो के अन्दर म्यूज़िक बजने लगा पुराने ज़माने मे कोई तसव्वूर भी नही कर सकता था. अल्लाह हम को सही समझ अता फरमाये और ऐसे गुनाहो से बचने की बार बार तौफीक अता फरमाये.